नोबल पुरुस्कार

विजेता महिला

# टोनी मोरीसन

अमरीकी लेखिका

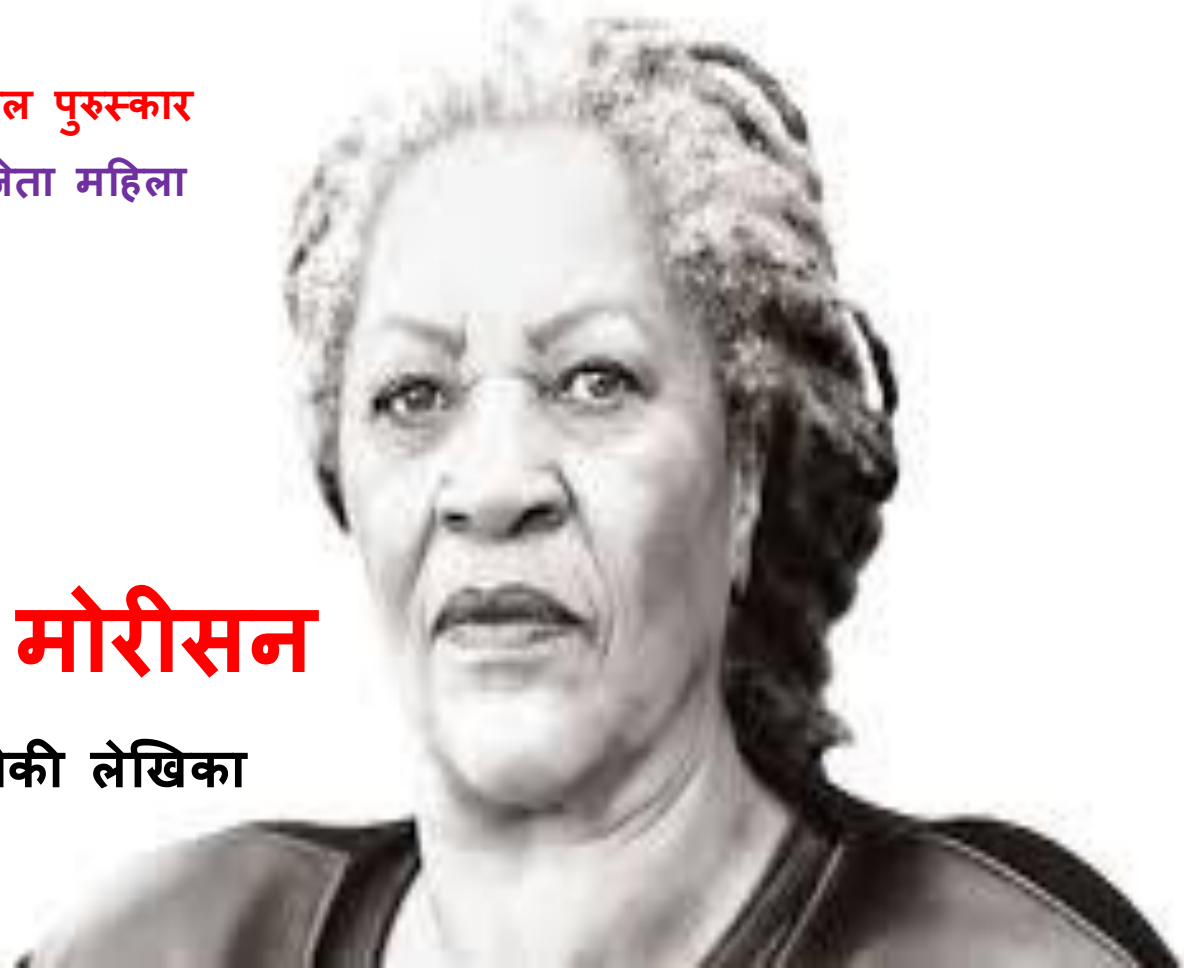

1931–

# टोनी मोरीसन

## अमरीकी लेखिका

### मुख्य घटनाएं

- 1953 होवार्ड यूनिवर्सिटी से स्नातक की डिग्री
- 1955 कॉर्नेल यूनिवर्सिटी से मास्टर्स की डिग्री
- 1957 में होवार्ड यूनिवर्सिटी में अध्यापन
- 1958 में हेरोल्ड मोरीसन से विवाह
- 1964 शादी, तलाक में बदली
- 1965 रैंडम हाउस में संपादन का कार्य
- 1969 पहली पुस्तक *द ब्लुएस्ट आँय*
- 1973 *सुला* पुस्तक का प्रकाशन
- 1977 *सॉंग ऑफ़ सोलोमोन* का प्रकाशन
- 1981 *टार बेबी* का प्रकाशन
- 1987 *बिलवेड* का प्रकाशन
- 1988 *पुलित्ज़र पुरुस्कार* से सम्मानित
- 1989 प्रिन्सटन यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर नियुक्त
- 1992 *जैज़* का प्रकाशन
- 1993 *नोबल पुरुस्कार* से सम्मानित
- 1998 *पैराडाइस* का प्रकाशन

*"मेरे नोवेल्स लोगों पर क्या असर डालेंगे, उस बारे में मैं बहुत सोच-विचार करती हूँ."*

### शुरू के साल

टोनी के परिवार में बहुत से लोग कहानियां सुनाते थे. उनके दोनों माता-पिता बहुत सुन्दर कहानीकार थे. उनकी दादी भी अच्छी दास्तांगो थीं. उनमें से कई कहानियां डरावनी, पर फिर भी रोमांचक होती थीं. उन कहानियों में अदभुत जादू और मज़ा होता था. उनमें एक कई कहानियां एफ्रो-अमेरिकन लोककथाएं थीं.

एफ्रो-अमेरिकन संगीत भी टोनी के बचपन का एक हिस्सा था. उनके माता-पिता जॉर्ज और रामह वोल्फोर्ड अमरीका के दक्षिणी भाग से थे. टोनी के जन्म के समय तक वे लोरेन, ऑहियो में आकर बसे थे. पर वे अपने बच्चों को अमरीका के दक्षिणी भाग की संस्कृति के बारे में सिखाते थे.

टोनी शुरू से ही बहुत होशियार छात्र थीं. उन्होंने लोरेन हाई स्कूल में अपनी पढ़ाई की और फिर 1950 में होवार्ड यूनिवर्सिटी में दाखिला लिया.

टोनी ने अपने लेखन में अक्सर अपने परिवार से विरासत में मिली एफ्रो-अमेरिकन मिथकों और कहानियों का उपयोग किया.

### एफ्रो-अमेरिकन लोककथाएं

एफ्रो-अमेरिकन लोककथाएं कई संस्कृतियों से आती हैं. उनमें से कुछ कहानियां अफ्रीका से भी आती हैं. कैरिबियन संस्कृति भी उनका एक महत्वपूर्ण स्रोत है. गुलामी के दौर में यह नई एफ्रो-अमेरिकन संस्कृति विकसित हुई.

एफ्रो-अमेरिकन लोग अपने जीवन के कष्टों को भुलाने के लिए गीत और कहानियाँ रचते थे. उससे एक ऐसी लोक-संस्कृति का विकास हुआ जो मिथकों, संगीत, नृत्य में बहुत समृद्ध थी.

## 1950 में नस्लभेद

आज के मुकाबले, 1950 में नस्लभेद को अधिक मान्यता थी – विशेषकर अमरीका के दक्षिणी राज्यों में. अमरीका के दक्षिणी राज्यों ने ऐसे कानून पारित किये थे जिससे एफ्रो-अमेरिकंस के ज़्यादातर होटल्स में खाने पर मनाही थी और वो ट्रेन और बसों में सिर्फ कुछ इने-गिने स्थानों पर ही बैठकर यात्रा कर सकते थे. ज़्यादातर स्थान सिर्फ गोरों के लिए ही सुरक्षित थे. सबसे अच्छी नौकरियां भी सिर्फ गोरों के लिए आरक्षित थीं. किसी एफ्रो-अमेरिकंस को अच्छी नौकरी, या अच्छी शिक्षा मिलना लगभग असंभव बात थी. वैसे गुलामी को समाप्त हुए सौ साल से भी ज्यादा बीत चुके थे फिर भी अमरीका के दक्षिण राज्यों में रह रहे लाखों एफ्रो-अमेरिकंस परिवारों की हालत में कोई खास बदल नहीं आई थी.

## कुशलता विकास

टोनी ने होवार्ड यूनिवर्सिटी में इंलिश साहित्य पढ़ा. खाली समय में वो कॉलेज के थिएटर ग्रुप में काम करती थीं. उनका ग्रुप गर्मियों में अमरीका के दक्षिणी राज्यों का दौरा करता था. इससे टोनी को उस इलाके को करीबी से देखने का मौका मिले जिसका वर्णन उसके माता-पिता अक्सर करते थे. टोनी को वहां की संस्कृति बहुत अच्छी लगी पर वहां का नस्लभेद देखकर बहुत चिढ़ हुई.

1953 में टोनी ने, होवार्ड यूनिवर्सिटी में अपनी पढ़ाई ख़त्म करके कॉर्नेल यूनिवर्सिटी में मास्टर्स की डिग्री के लिए दाखिला लिया. मास्टर्स समाप्त करके उन्होंने अध्यापन कार्य शुरू किया. उन्होंने दो साल टेक्सास साउथर्न यूनिवर्सिटी में पढ़ाया. उसके बाद वो दुबारा होवार्ड यूनिवर्सिटी में वापिस आईं और वहां वो सात साल रहीं.

होवार्ड यूनिवर्सिटी के काल ने टोनी की ज़िन्दगी को दो महत्वपूर्ण रूप में बदला. वहां उन्होंने जमैका के एक आर्किटेक्ट से विवाह किया और उनके दो बच्चे हुए. दूसरा, वहीं उन्होंने अपना लेखन कार्य शुरू किया.

अन्य बहुत से लेखकों की तरह टोनी ने अपने बचपन में कभी कोई कहानी नहीं लिखी थी. बचपन में वो एक पाठक थीं, लेखक नहीं. अगर उन्होंने होवार्ड में लेखकों के एक समूह की सदस्य नहीं बनी होतीं तो शायद वो एक पाठक ही बनी रहतीं. समूह के सभी सदस्यों को हर महीने कुछ लिखकर लाना होता था.

एक महीने टोनी ने एक ऐसी अश्वेत लड़की के बारे में लिखा जो नीली आँखें चाहती थी. असल में कहानी नस्लवाद के बारे में थी. टोनी कहना चाहती थीं कि अश्वेत बच्चे जैसे हैं उन्हें उसी पर गर्व होना चाहिए. 1969 में यह कहानी उनके पहले नावेल *द ब्लुएस्ट ऑय* का आधार बनी.

जब तक वो नावेल प्रकाशित हुआ तब तक टोनी होवार्ड यूनिवर्सिटी छोड़ चुकी थीं. उनका पति के साथ तलाक हो चुका था और उन्हें अपने दो बेटों को पालना था.

तब उन्होंने प्रसिद्ध प्रकाशन कम्पनी रैंडम हाउस में बतौर संपादक काम किया. यह उनके लिए बहुत व्यस्त काल था. दिन भर दफ्तर में काम करने के बाद रात को अपना खुद लेखन करती थीं. इस नावेल का नाम था *सुला.*

*सुला* एक ऐसी एफ्रो-अमेरिकन लड़की के बारे में थी जिसमें नीली आँखें चाहने वाली अश्वेत लड़की से कहीं अधिक आत्म-विश्वास था. पर यह कहानी भी नस्लवाद पर प्रहार करती थी और एफ्रो-अमेरिकन लोगों की समस्याओं को उजागर करती थी. 1973 में जब *सुला* छपी तो उसे बहुत सफलता मिली और वो नेशनल बुक अवार्ड के लिए नामांकित हुई. टोनी ने सिर्फ दस साल पहले लिखना शुरू किया था पर वो अब तक बहुत प्रसिद्ध हो चुकी थीं.

**टोनी ने 1957 में होवार्ड यूनिवर्सिटी में पढ़ाना शुरू करने बाद ही अपना लेखन कार्य शुरू किया.**

*"अपना पहला नावेल ख़त्म करते ही मुझे एक लेखक बनने की अनुमति मिल गई. कोई, जो बिल्कुल मुझ जैसी दिखती थी ने एक मास्टरपीस लिखा था."*

## नोट्स

- टोनी के दो बेटे हैं – हेरोल्ड और स्लेड
- टोनी कई यूनिवर्सिटीज में विसिटिंग प्रोफेसर रही हैं
- टोनी के माता-पिता ने उसे "चिओक" नाम दिया था. पर कॉलेज में उन्होंने अपना नाम बदलकर "टोनी" रखा.

टोनी को उम्मीद थी कि वो *द ब्लैक बुक* के ज़रिए एफ्रो-अमेरिकन समाज के रोज़मर्रा के हीरो और हीरोइन के इतिहास को लोगों के साथ साँझा करेंगी.

## उपलब्धियां

टोनी ने रैंडम हाउस प्रकाशन संस्था को सुझाव दिया कि वे एफ्रो-अमेरिकंस की ज़िन्दगी पर एक पुस्तक छापें. वो किताब नेताओं और राजनीतिज्ञों के बारे में न हो. वो किताब उन साधारण लोगों के बारे में हो जिनका इतिहास के पन्नों में अक्सर कोई ज़िक्र नहीं होता है.

उनके सुझाव का अच्छा नतीज़ा निकला. 1974 में *द ब्लैक बुक* प्रकाशित हुई. यह पुस्तक एक संकलन था - अख़बारों की कतरनों, लेखों, पत्रों, खाने की रेसिपीज, फोटोस और अन्य ख़बरों का. उससे पिछले तीन सौ सालों में एफ्रो-अमेरिकन लोगों की ज़िन्दगी की तस्वीर उभरकर सामने आती थी.

*द ब्लैक बुक* की सामग्री ने टोनी को एफ्रो-अमेरिकन लोगों की संस्कृति के बारे में और लिखने को प्रेरित किया. उनकी अगली पुस्तक *सॉंग ऑफ़ सोलोमोन* – गीतों और लोककथाओं से भरी थी. लोगों ने उसे एक मास्टरपीस करार दिया और उस पुस्तक ने दो प्रमुख पुरुस्कार जीते.

*सॉंग ऑफ़ सोलोमोन* की तीस लाख से ज्यादा प्रतियाँ बिकीं और उसने टोनी को एक प्रमुख अमरीकी लेखक के रूप में स्थापित किया. *टार बेबी* (1981) भी बहुत प्रसिद्ध हुई, और *बिलवेड* (1987) को कई पुरुस्कार मिले, जिसमे प्रसिद्ध अमरीकी प्राइज - पुलित्ज़र पुरुस्कार शामिल था.

उनकी पुस्तक *जैज़* (1992) को भी अपार सफलता मिली. फिर 1993 उन्हें साहित्य के लिए दुनिया के सर्वोच्च पुरुस्कार - नोबल प्राइज से नवाज़ा गया. नोबल पुरुस्कार को जीतने वाली वो पहली एफ्रो-अमेरिकन महिला थीं, और 1938 में, पर्ल बक के बाद नोबल प्राइज जीतने वाली दूसरी अमरीकी महिला थीं.

उसके बाद टोनी का अगला नावेल प्रकाशित होने में कई और साल लगे. *पैराडाइस* का प्रकाशन 1998 में हुआ. यह पुस्तक भी बहुत शक्तिशाली थी. टोनी "उस काल के चार महानतम लेखकों में से एक थीं", और शायद "अपने ज़माने की सर्वश्रेष्ठ नॉवेलिस्ट थीं."

हर नए नावेल के साथ टोनी की प्रसिद्धि और बढ़ती गईऔर उन्हें ज्यादा पुरुस्कार और सम्मान मिलते गए. पुरुस्कारों से भी ज्यादा बड़ी बात यह थी कि टोनी अपने सभी पाठकों के साथ अपने समाज की संस्कृति को साँझा किया.

*"मैं हमेशा चाहती थी कि मेरी पुस्तकें उन विषयों के बारे में हों जो मेरे लिए महत्वपूर्ण थे."*

1996 में टोनी, एक चैरिटी के लिए संगीतकार जेस्सी नार्मन के साथ.